वीर भारत तलवार
दुर्लभ परम्परा के आलोचक

सम्पादन
कमलेश वर्मा • सुचिता वर्मा • आनन्द बिहारी

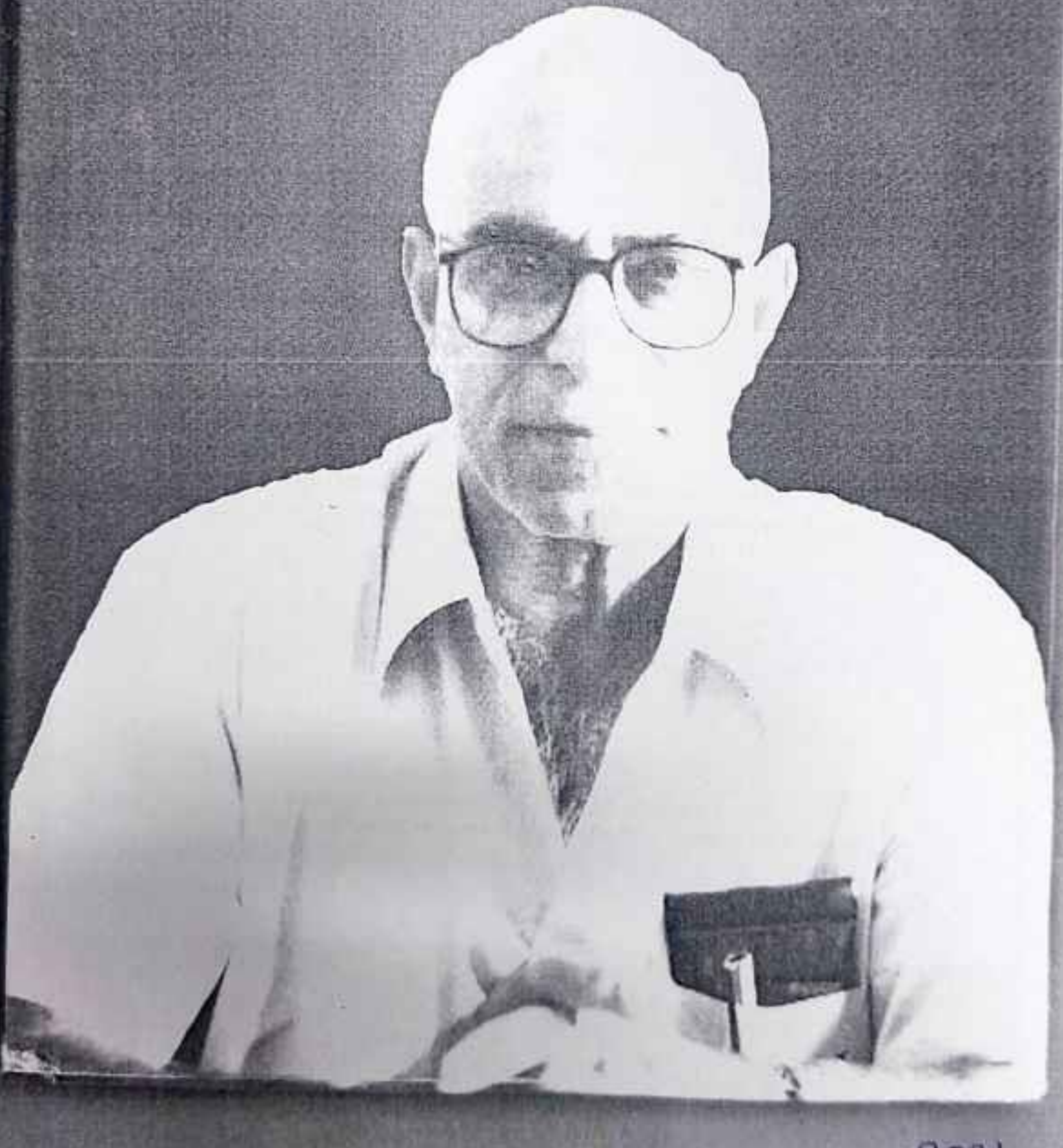

2021

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित है। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN 978-93-89341-53-9

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-22825424, 09350809192
www : anuugyabooks.com

मूल्य : 999 रुपये

आवरण

पॉल किल

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

VIR BHARAT TALWAR : DURLABH PARAMPARA KE ALOCHAK
A Festschrift *edited by* Kamlesh Verma, Suchita Verma, Anand Bihari

अनुक्रम

भूमिका 9

सम्पादकीय

दुर्लभ परम्परा के आलोचक 15

'...कि पत्थर नहीं हूँ मैं' 19

नवजागरण की 'रस्साकशी' : 'इमाँ मुझे रोके है तो खैंचे है मुझे कुफ्र...'

1. वीर भारत तलवार और उनका नवजागरण विमर्श —*प्रेमकुमार मणि* 21
2. हिन्दी नवजागरण —*राम विनय शर्मा* 27
3. जाति के प्रश्न और हिन्दी नवजागरण —*बजरंग बिहारी तिवारी* 42
4. 'सत्यार्थ प्रकाश' एवं आर्य समाज —*राजीव रंजन गिरि* 47
5. The Reformist Ulama and Public Debates in Colonial India –*Shahid Perwez* 53
6. 'रस्साकशी' : हिन्दी नवजागरण का पुनर्पाठ —*अलका तिवारी* 57
7. भारतेन्दु की स्त्री-शिक्षा और 'रस्साकशी' —*जगमोहन सिंह* 78
8. स्त्री शिक्षा का घरेलूकरण (संदर्भ : हिन्दी नवजागरण) —*किंगसन सिंह पटेल* 86

हिन्दी-उर्दू : 'केवल अपनाव से, प्राणों से एक थे...'

9. साझी विरासत, साझी अदावत! —*निरंजन सहाय* 100

किसान : 'जिसको फलक ने लूटकर वीरान कर दिया...'

10. किसान की कहानी के मायने : 'प्रेमाश्रम' और वीर भारत तलवार के सन्दर्भ में —*अनिरुद्ध कुमार* 110
11. अवध का किसान आन्दोलन और 'प्रेमाश्रम' —*एस. एन. वर्मा* 125

झारखण्ड : 'ख़ाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक...'

12. झारखण्ड आन्दोलन में डॉ. वीर भारत तलवार की भूमिका — *सूर्य सिंह बेसरा* 131
13. झारखण्ड : संस्कृति, समाज और विकास की बलिवेदी —*रणेन्द्र* 135
14. बतियाती हुई जन इतिहास की एक किताब —*वन्दना टेटे* 140
15. आदिवासी अस्मिता के पक्ष में... —*तेलानी मीना होरो* 143
16. मुण्डा लोकगीत : मुण्डा समाज के मानस का प्रतिबिम्ब —*अरविन्द कुमार*, *अंकिता कुमारी* 147

नवजागरण की 'रस्साकशी' : 'इमाँ मुझे रोके है तो खैंचे है मुझे कुफ़्र...'

भारतेन्दु की स्त्री-शिक्षा और 'रस्साकशी'

जगमोहन सिंह

भारतेन्दु ने स्त्रियों की शिक्षा के महत्त्व को समझा था। आज से लगभग 150 वर्ष पहले स्त्रियों को शिक्षित करने की बात कल्पना-स्वरूप थी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्त्री-शिक्षा की बात कही। उन्होंने स्त्रियों को पुरुष के समकक्ष रखा और कहा,

"नारी नर अरधंग की साँचेहिं स्वामिनि होय।।"

यह कहना उस दौर में साहस का काम था। भारतेन्दु निर्भीक वक्ता थे। वे किसी के दबाव में आकर कोई भी निर्णय तुरन्त नहीं लेते थे। उस समय की परिस्थितियाँ ऐसी थीं, वातावरण ऐसा था जहाँ कई बातों को साथ लेकर चलना होता था। कभी-कभी भारतेन्दु दबाव में आकर काम करते थे, परन्तु स्त्री-शिक्षा का वे पुरजोर समर्थन करते थे। भारतेन्दु स्त्रियों को आदर्श रमणी, आदर्श माता, आदर्श गृहिणी बनाना चाहते थे। उनका मानना था कि जब तक स्त्रियों को उचित शिक्षा नहीं दी जाएगी, उनका सही ढंग से मार्गदर्शन नहीं किया जाएगा समाज की उन्नति नहीं होगी। वीर भारत तलवार भारतेन्दु की स्त्री-शिक्षा के दृष्टिकोण की कड़ी आलोचना करते हुए कहते हैं कि भारतेन्दु ने स्त्री-शिक्षा की वकालत सही ढंग से नहीं की। यदि उन्होंने सही ढंग से स्त्री-शिक्षा की वकालत की होती, ब्रिटिश शासकों के दबाव में न आए होते तो स्त्रियों की शिक्षा-व्यवस्था में सुधार के काम बहुत पहले ही शुरू हो गए होते। आज राष्ट्र की स्थिति कुछ और ही होती।

वीर भारत तलवार हिन्दी आलोचना के ऐसे सशक्त सिरमौर हैं जिनकी निर्भीक वाणी (भारतेन्दु की तरह) ने आलोचना जगत को एक नयी दिशा दी है। उनकी आलोचना दृष्टि पूर्वाग्रह में लिप्त नहीं है। बने-बनाए ढर्रे पर चलना भी उन्हें गवारा नहीं है। वे सबकी हाँ में अपनी हाँ नहीं मिलाते, बल्कि तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर एक ऐसा दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं जहाँ से झनझनाहट की ध्वनि सुनाई पड़ती है। प्रमाणित कर तथ्यों को प्रस्तुत करने की शैली ने आलोचना जगत में उनकी एक अलग पहचान बनाई है। वे राह से भटकते नहीं, बल्कि एक नयी राह बनाते हैं और उस राह पर बड़े परिश्रम के साथ चलकर एक सशक्त दृष्टि प्रदान करते हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, रामविलास शर्मा, निर्मल वर्मा, हरिशंकर परसाई, प्रेमचन्द की दृष्टि के साथ-साथ नवजागरण के तथ्यों को खँगालते हुए उनकी आलोचना दृष्टि एक नयी दिशा प्रदान करती है, जिनमें ज्वलन्त विचारधाराओं की अनुगूँज सुनाई पड़ती है। यदि तटस्थ पाठक विचलित न होकर इन विचारधाराओं के सैलाब में गोते लगाए तब कुछ ढूँढ़ा जा सकता है।

Pratima Saha is the Librarian of Acharya Girish Chandra Bose College, Kolkata. She obtained a master's degree in both Commerce and Library and Information Science from The University of Burdwan and the University of Calcutta respectively. She has been awarded M.Phil. in Library and Information Science from the University of Calcutta. Previously she worked as Library Professional at West Bengal Commission for Women. She has presented many papers in national and international seminars and conferences. Her research articles also have been published in books and refereed journals.

Santu Ghosh is the Librarian of Raniganj Girls' College, Raniganj, Paschim Bardhaman since the year of 2017. Previously he worked as a Library Clerk in the National Library of India, Kolkata (2013-2016). He obtained a master's degree in Library and Information Science. He has been awarded M. Phil. in Library and Information Science from the University of Calcutta. He has presented many papers in national and international seminars and conferences. He has published articles in various referred journals and books. This book is his first initiative as an author of a book.

9 788195 549481

Contribution of Philanthropists in Library | Pratima Saha & Santu Ghosh

Contribution of Philanthropists in Library

Pratima Saha

Santu Ghosh

The book entitled "Contribution of philanthropists to library" is really a research work. Elaborately and exhaustively all the contributions are collected from various sources. Reader can feel the image of library development in a glance.

300.00

ISBN: 978-81-955494-8-1

Contribution of Philanthropists in Library

Pratima Saha
Santu Ghosh

Contribution of Philanthropists in Library
a Jovial Concept about the Patrons in Library
by Pratima Saha & Santu Ghosh.

First Published: December, 2021

© Pratima Saha & Santu Ghosh

Cover Design: Ankan Gupta

All rights reserved. No Part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means, without the prior written permission of the Author and Publisher.

ISBN : 978-81-955494-8-1

On behalf of Saswata Publication, published by Vyasdev Gayen from Ganapatipur Basirhat North 24 Parganas 743411 and Printed by Ayesha Printers from Barasat Kolkata.

Mobile No.- 9547468848

Price: Three Hundred Rupees Only

Entrance channel effect on the production of high-energy γ rays

Debasish Mondal[1],* S. Mukhopadhyay[1,2], Deepak Pandit[1,2], Surajit Pal[1], Pratap Roy[1,2], Balaram Dey[3], Srijit Bhattacharya[4], A. De[5], Soumik Bhattacharya[1], S. Kundu[1,2], S. Manna[1,2], T.K. Rana[1,2], R. Pandey[1], S.R. Banerjee[6], and C. Bhattacharya[1,2]

[1]*Variable Energy Cyclotron Centre, 1/AF Bidhannagar, Kolkata - 700064, INDIA*
[2]*Homi Bhabha National Institute, Training School Complex, Anushaktinagar, Mumbai – 400094, INDIA*
[3]*Department of Physics, Bankura University, Bankura - 722155, INDIA*
[4]*Department of Physics, Barasat Government College, Barasat, N 24 Parganas, Kolkata - 700124, INDIA*
[5]*Department of Physics, Raniganj Girls' College, Raniganj 713358, INDIA*
[6]*(Ex) Variable Energy Cyclotron Centre, 1/AF-Bidhannagar, Kolkata - 700064, INDIA*
* *email: debasishm@vecc.gov.in*

Introduction

The γ rays emitted in nuclear reactions provide a clean probe to explore the properties of atomic nucleus and collision dynamics. The production mechanism of high-energy γ rays in nuclear reactions has, therefore, been the subject of intense investigation both theoretically and experimentally [1-3]. In heavy-ion reactions, with projectile energies below 7 MeV/nucleon, the γ-ray yield can well be understood by compound nuclear mechanism, with a γ-ray strength function dominated by the giant dipole resonance (GDR). At higher beam energies, non-statistical processes such as nucleon-nucleon bremsstrahlung contribute. The nucleon induced reactions, on the other hand, show some interesting features in the γ-ray spectrum. The nucleon can be captured to any of the single particle configurations of the composite system thereby emitting a γ ray. This is called direct capture. The nucleon can also be captured to a compound nuclear state which subsequently decays by the emission of γ rays in competition with particle decay. In between the compound and direct capture process, the γ rays can be produced by the semidirect process where the incoming nucleon excites the GDR in a single-step process, which subsequently decays by the emission of high-energy γ rays.

In this work, we present the measurement of high-energy γ-rays (5-25 MeV) for proton and alpha induced reaction on ^{115}In and ^{112}Sn nuclei, respectively. The target projectile combination was so chosen to have the nuclei of the same mass and the projectile energies were selected so that roughly the same intrinsic excitation energy is reached through the compound process. The γ-ray and neutron energy spectra both were measured. From the neutron spectra, it has been shown that level density of the nucleus away from the β-stability line decreases [4]. In this work, the results for the measured γ-ray spectra are presented.

Experimental Details

The experiments were performed at the Variable Energy Cyclotron Centre, Kolkata. The ^{1}H and ^{4}He beams of energies 12 and 28 MeV were bombarded on self-supporting ^{115}In and ^{112}Sn targets, respectively. The high-energy γ rays were measured using a part of the LAMBDA array [5] consisting of 49 large (3.5×3.5×35 cm^3) BaF_2 scintillators. The array was placed at a distance of 50 cm from the target position at an angle of 90° with respect to the beam direction in a 7×7 matrix. The neutrons were rejected by using the TOF technique. The start trigger was generated using two-part multiplicity filter [6]. Each part had 25 small (3.5×3.5×5 cm^3) BaF_2 detectors, and was placed on the top and bottom of the target chamber in 5×5 staggered castle type geometry. The data in LAMBDA array was detected in coincidence with at least one detector of the multiplicity filter. The high-energy γ-ray spectra were generated in the offline analysis by cluster summing technique [5] using proper cuts to eliminate the neutron and pile-up events. The cosmic muon events were rejected by using the hit-patterns in the LAMBDA array, which are quite different from actual γ events.

Alokkumar De

Available online at www.sympnp.org/proceedings

η/s ratio of nuclear matter at high angular momentum and its theoretical validation

Srijit Bhattacharya[1],* Deepak Pandit[2,3], B. Dey[4], D. Mondal[2], S . Mukhopadhyay[2,3], Surajit Pal[2], A. De[5] and S. R. Banerjee[6]
[1] Department of Physics, Barasat Government College, Barasat, N 24 Parganas, Kolkata - 700124, INDIA
[2] Variable Energy Cyclotron Centre, 1/AF Bidhannagar,Kolkata - 700064, INDIA,
[3] Homi Bhabha National Institute, Training School Complex, Anushaktinagar, Mumbai – 400094, INDIA
[4] Department of Physics, Bankura University, Bankura - 722155, INDIA
[5] Department of Physics, Raniganj Girls' College, Raniganj 713358, INDIA
[6] (Ex)Variable Energy Cyclotron Centre, 1/AF Bidhannagar,Kolkata - 700064, INDIA.
* email: srijit.bha@gmail.com

Introduction

The ratio of shear viscosity to entropy density (η/s) is a key property of an ideal fluid. The conjecture of Kovtun-Son-Starinets (KSS) lower bound has initiated avid research work in this field, especially in strongly correlated Fermionic systems like quark-gluon-plasma at very high temperature (T). The relation between nuclear collectivity and η has been established by references such as Auerbach and Shlomo, using isovector giant dipole resonance (IVGDR)[1]. IVGDR width and energy may be used to understand η and η/s ratio. However, GDR is a collective phenomenon and hence the trend of T-dependent η is different from that of classical fluids. Dang [1] unveiled a new elegant but simple formalism to connect GDR width and the ratio. In a recent work, interestingly, Mondal et al [2] has shown that at low T and angular momentum (J) values, atomic nucleus behaves as almost an ideal fluid with η/s very similar to quark-gluon-plasma at high temperature. This probably indicates that strong fluidity could be the universal feature in strong interaction. The behaviour of atomic nuclei at high J and T in terms of η/s has also been studied in a few nuclei in our recently published work[1]. The Fermi liquid drop model, which was highly instrumental to explain the ratio at low T and J, could not explain the experimental η/s at high J (12-54ħ) and T (1.2-2.1 MeV) and hence modified as J-FLDM. It was found, however, that critical temperature included fluctuation model (CTFM) successfully predicts the experimental data.

Alokkumar De

So far there are a few interesting investigation in this field. But the study of η/s at high J and T is still very rare. In this work, η and η/s of ^{80}Zr, ^{81}Rb, and ^{86}Mo are extracted from the existing experimental data of GDR width. The entropy density (s) is also explored from the experimental data and finally η/s ratio has been found out. We also investigated the validity of J-FLDM as well as CTFM to explain the experimental data.

Data analysis

The nuclei ^{80}Zr, ^{81}Rb are selected from the existing literature. These compound nuclei (CN) were populated in the reactions ^{40}Ca+^{40}Ca, ^{37}Cl+^{44}Ca [3] (beam energy E_{lab} at 136 and 95 MeV, excitation energy Ex of 54 and 83 MeV, respectively). The nucleus ^{86}Mo was populated in the reaction ^{28}Si+^{58}Ni at E_{lab} 125 MeV and Ex of 66 MeV [4]. The average angular momentum J has been 35ħ and temperature T is 1.8-1.9 MeV in the first two reactions. For the latter, J and T were kept at 35ħ and 1.23 MeV. The average J and T have been found out using statistical model code CASCADE selecting only the decay steps that directly contribute to the GDR γ-ray emission. The angular momentum J is greater than the critical angular momentum J_C beyond which its effect can be observed on the GDR width Γ. The GDR width at ground state (Γ_0) is taken as 4.5 MeV that was measured experimentally in photoabsorption experiment [3]. The viscosity η at temperature T is extracted in this work using the experimental GDR width as proposed by Dang in the equation:

Search for Three-body force contribution in the break-up of deuterons by protons

A. De[1*], Debakinandan Majee[2], Srijit Bhattacharya[3], S. R. Banerjee[4], Deepak Pandit[4], S. Mukhopadhyay[4], Surajit Pal[4], Debasish Mondal[4] and Balaram Dey[5]

[1]Department of Physics, Raniganj Girls' College, Raniganj, Burdwan (West) - 713358, W. B., India
[2]Department of Physics, Katwa College, Katwa, Burdwan (East) - 713130, W. B., India
[3]Department of Physics, Barasat Govt.College, Barasat, N-24 Pgs. Kolkata – 700124,W.B., India
[4]Variable Energy Cyclotron centre, 1/AF Bidhan Nagar, Kolkata – 700064, W. B., India
[5]Department of Physics, Bankura University, Bankura, W.B., India
** email:akd.panua@gmail.com*

Introduction and Aim

The existence and manifestation of three-body forces in few nucleon break-up experiments have been the topics of increasing interests since long ago. In this direction, the best testing table has been the nucleon-deuteron system, alpha-deuteron system being treated as the next candidate due to highly stable character of alpha particle [1-7]. With the advent of time, there have been a large collection of high precision experimental data along with highly rich different theoretical approaches like those based on Faddeev theoretical calculations. Though the overall agreement between theory and experiment is rather good, there exist certain notable discrepancies, especially at and around the collinear region in the kinematically allowed phase space, where three-body force (3BF) effects are expected to be manifested [4,7,8] quite favourably. The existing discrepancies around the collinear region point to the necessity of including new ingredient like 3BF in addition to the standard two-body inputs in the 3N calculation. The present article aims at searching the possible contribution of 3BF effects in the realization of the existing discrepancies [4-6] in the experimental distribution of three-body correlation cross sections in the proton induced break-up of deuterons at two incident energies and three chosen correlated pairs of angles.

Data Analysis and Discussions

Based on the idea that three-body forces (3BF) are, in general, strongly angle dependent and that the interaction is likely to be favoured at low relative energies due to long time of escape from the nuclear interaction volume, a simple form of 3BF calculation [7,8] which provided fairly good result for both the alpha-deuteron and nucleon deuteron systems, is also applied in the present case. Concentrating on sharp collinear region, we exploited data from the existing literature [4,5], at incident proton energies, $E_{p(lab)}$ = 65 MeV and correlated pair of angles as (θ_1, θ_2) = (59.50°,59.5°). Patial fulfillment of collinearty condition occurs for the data [4,6] at $E_{d(lab)}$ = 16 MeV, with correlated pairs of angles (24.4.0°,40.0°), and (31.4°,31.4°). Results of our calculations are displayed in figures 1*a*, *b* and *c*, where in each figure black dashed curve corresponds to existing [4] Faddeev type calculations (without 3BF), dotted blue curve corresponds to present 3BF calculation (in arbitrary unit), while the solid red curve represents the incoherent summation of 3BF with FT [4]. Point on the S-axis satisfying collinear condition in fig 1(a) is indicated by an arrow mark. Our observations are summarized as given below.

(i) In both the conditions: satisfying strict collinearity codition (Fig 1(a)) and meeting partial fulfillment of collinearity (Figs 1(b) and (c)), 3BF effect (blue dotted curves) seem to manifest itself leading to better reproduction (solid red curves; FT+3BF in the figures) of the shape of the experimental distribution of the three-body correlation cross sections.

(ii) At Ep=65 MeV (Fig 1(a)), the existing discrepancy between the theory and experimental distribution is found to be significantly reduced when 3BF contribution is taken care of with the existing fit (FT+3BF, red solid curve), the left wing of the right peak of the distribution is found

Alokkumar De

Reimagining South Asian Art, Culture and Archaeology

Edited by
Madhab Choudhary
Anantashutosh Dwivedi
Azad Hind Gulshan Nanda

HERITAGE SOCIETY
PATNA (BIHAR)

M.L.S.M. COLLEGE, L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)

Suhas Anand Kapur

SWATI PUBLICATIONS
DELHI

First Published 2021

© Heritage Society

ISBN: 978-93-81843-34-5

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, otherwise, without the prior permission of Editor and Publisher.

Front Cover Image:
The image represents the Mahabodhi temple complex, Bodhgaya.

Background Image:
This is a representation of the Martand Sun temple located in Anantnag, Jammu and Kashmir

Published by:
For **Swati Publications**
34, Central Market, Ashok Vihar
Delhi - 110 052
Tel.: 91-11-27212195, 43513480 Fax: 91-11-27212195
Email: swatipublications7@gmail.com, agamkala101@gmail.com
www.agamkala.com

Heritage Society
Phulwarisharif, Patna (Bihar)- 801505
Phone: +91-7761902685
Email: heritagesociety.in@gmail.com
www.heritagesociety.in

M.L.S.M. College
L.N. Mithila University
Darbhanga (Bihar)-846004
Tel.: 06272-220550
www.mlsmlnmu.ac.in

Composed by:
Sushil Kumar
Delhi - 110 052
Mobile: 9891395309

Printed in India

Contents

Foreword vii
Acknowledgements ix
Preface xi
List of Editors and Contributors xiii

Chapter 1: Archaeology: Fundamental Issues and the Way Forward — 1
Amita Satyal

Chapter 2: Recent Findings on Vangchhia Excavation and Explorations in and around Mizoram — 17
Sujeet Nayan

Chapter 3: Archaeological Explorations at Ganaur Tehsil, District Sonipat, Haryana — 49
Parveen Kumar, Arun Kumar Singh

Chapter 4: Riddle of the Rhino: Tracing early human migration in India through the cave paintings of Bhimbetka — 59
Turzo Nicholas Mondal, Suddhabrata Chakraborty

Chapter 5: Stylistic Patterns of Ganesha Image in Kamrupa District — 83
Chabina Hassan, Dwipen Bezbaruah

Chapter 10

Tracing the Linkages of Buddhism between Ancient South-Eastern Bengal and South-East Asia: An Overview

Suhas Chand Kapur

The circulation of Buddhist texts, ideas, and people over Asia-wide trade networks in the premodern period paved the path for the radical expansion of Buddhism all across Asia. It reached Southeast Asia, specifically in Myanmar and Thailand, by the c. second-century C.E.[1] The famous Sanskrit inscription of *Mahānavika* Buddhagupta[2] in the Malay Peninsula, dated around c. fifth century C.E. clearly shows that the Buddhist maritime activities were widespread for hailing the communication with the outside world. The expansion of maritime trade networks in the Bay of Bengal led to the emergence of several trading entrepots such as Bengal, Orissa, Kedah, Srīvijaya, Java, and Guangzhou as major nodal points for exchanges connecting South Asia with Southeast Asia. Among those, Bengal, being strategically located on a distinct geographical location with its hydrograph (i.e., world largest deltaic region), played a pivotal

Chapter 6: कश्मीर का मार्तण्ड मन्दिर: साहित्यिक व पुरातात्त्विक सन्दर्भ 95
मयंक शेखर

Chapter 7: Ancient Epigraphic Records of Bihar: A Numismatic Perspective 103
Anantashutosh Dwivedi

Chapter 8: A preliminary study of the prehistoric tools collected from Santal Parganas and deposited at Museum of Cultural History, University of Oslo by Reverend Paul Olaf Bodding with a special focus on the raw material 115
Soumyajit Das

Chapter 9: Art and Architecture of Kapili Jamuna Valley 133
Nabajit Deori, Dwipen Bezbaruah

Chapter 10: Tracing the Linkages of Buddhism between Ancient South-Eastern Bengal and South-East Asia: An Overview 141
Suhas Chand Kapur

Foreword

Reimagining South Asian Art, Culture and Archaeology is a prodigious book that should be read by every graduate and post-graduate student with interests in South Asian art, culture, and archaeology. This edited volume brings together a series of essays that addresses the broad issues of trans-disciplinarity and cultural complexity attested with the art and archaeological practices of the region.

The theme of the present volume is a logical step forward from the theme of the conference *Recent Archaeological Investigations in South Asia* jointly organised by the Archaeological Exploration and Excavation Department, Heritage Society, Patna, and M.L.S.M. College, L.N. Mithila University, Darbhanga, on 29-31 July 2020. The conference brought together many diverse interests that clearly outline how archaeology in recent times have shifted from the materialistic outlook of the imperialistic and monumental remains of the past to a more nuanced study of urbanisation pattern, cultural intelligibility, and theatrical discourse of spatial-temporal interactions of objects with the site. The editors of this book have rightly perceived archaeology along a continuum ranging from monument-centric approach to collaborative trans-disciplinary endeavour.

This volume effectively reopens a serious discussion on fundamental issues of archaeology and suggests effective ways that

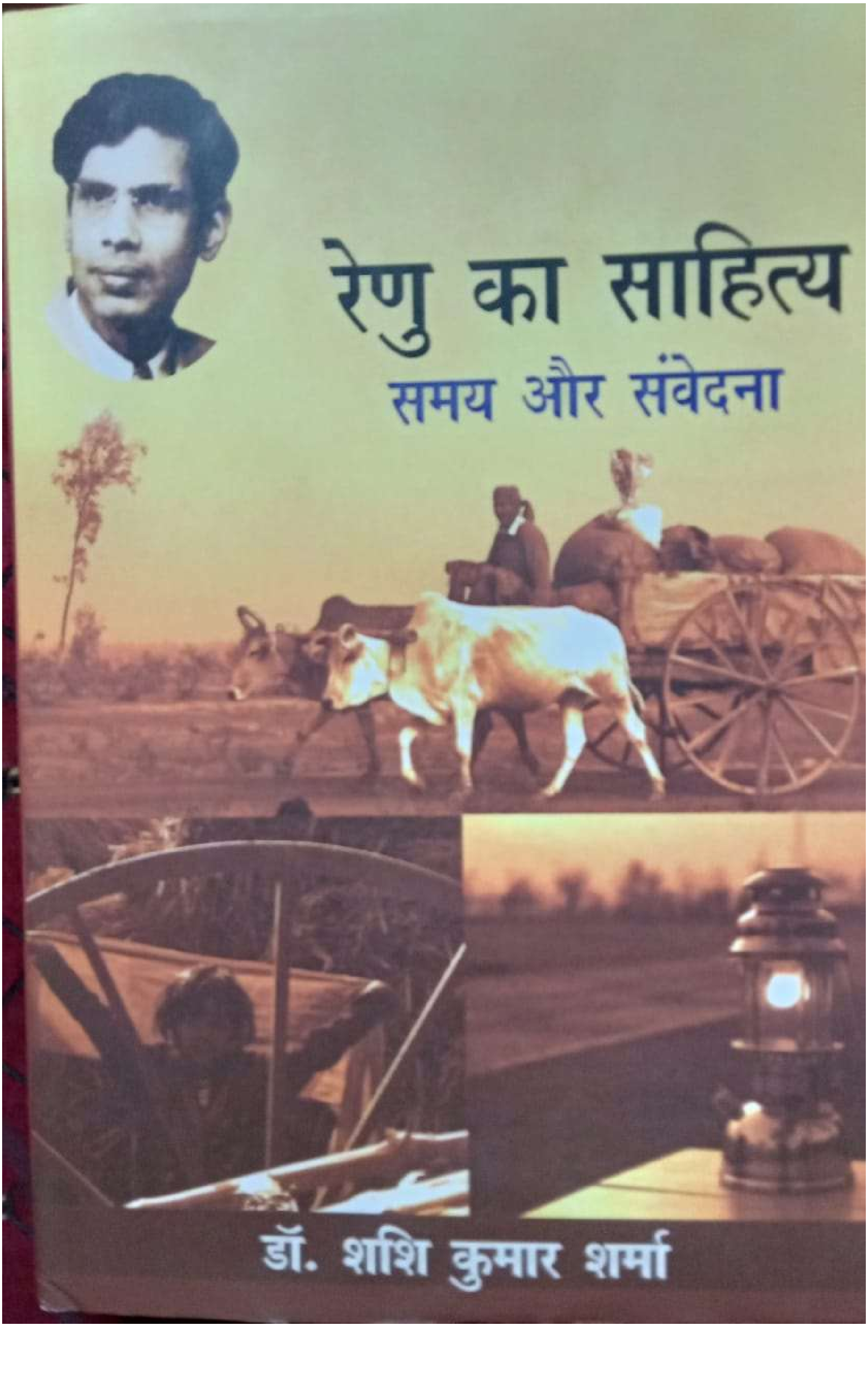
रेणु का साहित्य
समय और संवेदना
डॉ. शशि कुमार शर्मा

प्रकाशक :

अधिकरण प्रकाशन

मकान संख्या-133, गली नम्बर-14, प्रथम तल,
बी-ब्लॉक, खजूरी खास, दिल्ली-110094
मोबाईल : 9716927587
ईमेल : adhikaranprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण	:	2021
आवरण चित्र	:	दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात'
टाईप सेटिंग	:	मनीष कुमार सिन्हा
प्रिंटिंग	:	जी. एस. ऑफसेट, दिल्ली

© डॉ. शशि कुमार शर्मा

ISBN : 978-93-89194-69-2
मूल्य : 495 रूपये

रेणु का साहित्य : समय और संवेदना(आलोचना)-डॉ. शशि कुमार शर्मा

Renu Ka Sahitya: Samay Aur Samvedana (Crticisim) by Dr. Sashi Kumar Sharma

सम्पृक्ति : **डॉ. प्रदीप कुमार**
'संवदिया' में मानवीय संवेदना की सार्थकता 116
: **डॉ. एकता मंडल**
'जलवा' : भारतीय राजनीति का यथार्थ दस्तावेज 123
: **डॉ. कार्तिक चौधरी**
फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में गाँव 130
: **डॉ. कलावती कुमारी**
'हम तुमसे मोहोब्बत करके सलम' : रेणु की कहानियों 140
के संदर्भ में : **डॉ. भैरव सिंह**
'तीसरी कसम' : साहित्यिक कथाकृति की सफल सिनेमाई 157
अभिव्यक्ति : **बबली रविदास**
रेणु की कहानियों में प्रेम और आधुनिकता ('तीसरी कसम' 165
और 'पंचलाइट' के विशेष संदर्भ में) : **माम्पी शर्मा**
फणीश्वरनाथ रेणु की कविता-यात्रा : **नीलम मिश्र तिवारी** 173
रेणु का व्यंग्य साहित्य : **डॉ. ऋषि कुमार** 180
फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताज में जन-संघर्ष का स्वर 185
: **डॉ. अनिता मिश्रा**
'ऋणजल धनजल' में अभिव्यक्त बाढ़ और सूखा की 195
विभीषिका : **प्रेम कुमार साव**
'मैला आँचल' की भाषा : **प्रो. मुक्तेश्वर नाथ तिवारी** 203
'मैला आँचल की 'शैली' : **डॉ. जोतिमयबाग** 211
भाषिक शिल्पकार रेणु : **डॉ. प्रतिभा प्रसाद** 215
अंशदाता-सूची 222

फणीश्वरनाथ रेणु की कविता-यात्रा

- नीलम मिश्र तिवारी

फणीश्वरनाथ रेणु बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। इन्होंने अपने जीवन, समाज, परिवेश तथा राजनीति से जुड़े अनुभव को कविता का रूप दिया है। संख्या की दृष्टि से इन्होंने कम कविताओं को लिखा है। इनकी कविताओं में मानव की व्याकुलता, छटपटाहट, आक्रोश तथा संघर्ष को संवेदनशीलता के साथ जिवंत रूप दिया गया है। इनकी पहली कविता 'होली'(1945) है। कवि की मूल चेतना ग्राम -संस्कृति से 'अग्नि तत्व' अर्थात क्रांति की ओर अग्रसर हुई है। इनकी यह चेतना होली से आरंभ हुई है। कवि की कल्पना सुंदरी साजन से वसंत के सबसे बड़े पर्व होली में आनंद मनाने के लिए कहती है। एक दिन के लिए गरीबी भूल जाने को कहती है। जो खूनी और बर्बर समाज है वह 'नर-शोणित' का सागर मथकर भी सच्चा आनंद नहीं प्राप्त कर सका है। एक तरफ गरीबों का आनंद है और दूसरी तरफ धरती को रक्त रंजित करनेवालों का-

''साजन होली आई है? यौवन की जय
जीवन की लय? गूंज रहा है मोहक मधुमय
उड़ते रंग गुलाल? मस्ती जग में छाई है।''(होली)

1945 ई. में रचित 'समर्पण' कविता में कवि अपनी कल्पना तितली को स्वच्छंद रहकर प्रेम की मोहक कहानीहृदय की नव कलियों को सुनाने के लिये कहता है। वह विकासोन्मुखी भावनाओं को सुनाए, जिससे युगों से सोई हुई जवानी जाग उठे। कवि सोए हुए भारत को जगाने की बात कहता है। वह चाहता है कि कल्पना तितली, जीवन के अमृत, नव भाव को चुनकर कवि के हृदय में संचित करे-

''चंचले तुमको समर्पित स्नेह का अनमोल धन यह
याद शैशव की मधुर जलजात-सा सुकुमार मन यह

फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताज में जन-संघर्ष का स्वर

- डॉ. अनिता मिश्र

द्वितीय विश्वयुद्ध ने विश्व-साहित्य में एक नई विधा को जन्म दिया, जिसे रिपोर्ताज के नाम से जाना जाता है। हिंदी में रिपोर्ताज विधा को विकसित और समृद्ध करने का श्रेय फणीश्वरनाथ रेणु को जाता है। उन्होंने सन 1945 से सन 1975 तक निरंतर रिपोर्ताज-लेखन का काम किया जो समय-समय पर विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। उनमें से आज कुछ उपलब्ध हैं और कुछ अनुपलब्ध। उन्होंने रिपोर्ताज के कैनवास पर भारत के साथ-साथ नेपाल और बांग्लादेश की जनता के संघर्ष, आशा-आकांक्षा, आस्था-अनास्था, विश्वास-अविश्वास के चित्रों को उकेरा है।

बिहार के दरभंगा, भागलपुर, पूर्णिया के ग्रामीण अंचल के पिछड़ी जातियों में बिदापत-नाच का प्रचलन रहा है। धांगड, दुसाध, मूसहर, कोल आदि जातियाँ बियाह-मुंडन जैसे शुभ अवसरों पर इस नाच का आयोजन करती हैं। कथित सभ्य समाज इस नाच को ओछि नजर से देखता है। रेणु दलितों के गाँव में जाकर इस नाच का आनंद प्राप्त करते थे। सन 1945 में विश्वमित्र में प्रकाशित रिपोर्ताज 'बिदापत-नाच' में रेणु ने नाच के बहाने दलितों के आर्थिक-संघर्ष को उजागर किया है। अर्थ केंद्रित भारतीय समाज-व्यवस्था में ऋण चुकाने के लिए दलित की संपूर्ण जिंदगी भी कम पड़ जाती है। आनंद के क्षण में भी वह ऋण की पीड़ा में ही डूबा रहता है-

''बाप रे? बाप रे कोन दुर्गति नहीं भेल।
सात साल हम सूद चुका ओल? तबहूँ उरीन नहीं भेलौं।
कोल्हुक बरदसन खटलौं रात-दिन? करज बढ़तही गेल
थारी बेंच पटवारी केदिलीयेंह? लोटा बेंच चौकीदारी!

مضامینِ شانتی رنجن

مرتب

ڈاکٹر محمد فاروق اعظم

مغربی بنگال اردو اکاڈمی
محکمہ اقلیتی امور و مدرسہ تعلیم، حکومت مغربی بنگال

MAZAMEEN
-E-
SHANTI RANJAN

Compiled by

Dr. Md. Farooque Azam

Published by :

West Bengal Urdu Academy

Minority Affairs & Madrasah Education Department,
Government of West Bengal

ISBN -978-93-93059-35-2

9 789393 059352

Edition 2021 Price Rs. 298/-